Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 1, January-2021, ISSN 2230-7540

बैगा जनजाति की झूम (बेवर) कृषि पद्धति

कल्पना बिसेन[1]*, डॉ. गुलरेज़ खान[2]

[1] शोधार्थी, सरदार पटेल विश्वविद्यालय डोंगरिया, बालाघाट

[2] सह प्राध्यापक, समाजशास्त्र, सरदार पटेल वि.वि. डोंगरिया बालाघाट (म.प्र.)

सार - बैगा जनजाति मध्य प्रांत की जनजातियों के बीच एक अलग स्थान रखती है। इस जनजाति के विकास की स्थिति के आलोक में छत्तीसगढ़ सरकार ने इसे एक विशिष्ट पिछड़ी जनजाति श्रेणी में बनाए रखा है। एक विशेष पिछड़ा समूह होने के कारण बैगा जनजाति को सरकार का संरक्षण प्राप्त है, जिसके परिणामस्वरूप इस जनजाति के लिए कई सरकारी परियोजनाएं लागू की जा रही हैं। बैगा जनजाति जितनी पुरानी है उतनी ही प्राचीन बैगा की सभ्यता है। बैगा जनजाति ने अपनी संस्कृति को बनाए रखा है। उनका रहन-सहन और खान-पान काफी बुनियादी है। बैगा जनजाति के लोग पेड़ की पूजा करते हैं और बुद्ध देव और दूल्हे देव को अपनी दिव्यता मानते हैं। बैगा जादू टोना और जादू टोना में विश्वास रखता है। उनके कपड़े काफी खराब हैं। बैगा नर आम तौर पर अपने सिर पर एक लंगोटी और एक गमछा पहनते हैं, जबकि बैगा महिलाएं साड़ी और पोल्खा पहनती हैं। लेकिन अब मैदानी इलाकों में रहने वाले छोटे बच्चों ने शर्ट-पैंट भी अपनाना शुरू कर दिया है। इस लेख में बैगा जनजाति की झूम (बेवर) कृषि पद्धति को दर्शाया गया है

कीबर्ड - बैगा जनजाति, झूम (बेवर), कृषि पद्धति

----------X----------

परिचय

बैगा एक ऐसी जनजाति है जिनका धरती माता से बेहद लगाव है, वे अपने आपको भूमि पुत्र मानते हैं, जिस प्रकार धरती को हम अपनी दूसरी माता मानते हैं उसी प्रकार वे भी धरती को अपनी माता मानते हैं इसी मान्यता के कारण वे कृषि कार्य करते समय धरती को हल के माध्यम से छलनी नहीं करना चाहते क्योंकि उनका मानना है कि ऐसा करने से उनकी माता (धरती माता) को तकलीफ होती है । इसीलिये वे कृषि की बेवर पद्धति के माध्यम से कृषि कार्य करते हैं । इसमें वे हल से जुताई ना करके सीधे बीज को राख जो कि पेड-पौधों को जलाकर एकत्र की जाती है उसमें सीधे मिश्रित बीज (12 जात अनाज) को फेंक देते हैं और फिर बारिश का इंतजार करते हैं, कृषि की इस पद्धति को बेवर या झूम कृषि कहा जाता है । बेवर या झूम कृषि पद्धति बैगा जनजाति की परंपरागत खेती करने का एक तरीका है ।

" बैगा " का अर्थ होता है- "ओझा " , इस जाति के लोग झाड़-फूंक और अंध विश्वास जैसी परम्पराओं में विश्वास करते हैं और जड़ी-बूटियों के जानकार होते हैं, इन्हें वैद्य भी कहते हैं। सभ्य दुनिया की तमाम कृत्रिमताओं से दूर सभ्यताजनित अनेक वर्जनाओं और आडम्बरों से परे एक अलग संसार है जिनकी उन्मुक्त और आधुनिकता के प्रदूषण रहित स्वच्छ हवा में आदिम गंध से महकते वन-फूल खिलते हैं । झूूमते और थिरकते हैं । जी हॉ, इसी भारतवर्ष में जहॉ आज हम इक्कसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, नित नई प्रगति की उड़ान भर रहे हैं, यहॉ ऐस लोग भी बसते हैं जो आधुनिक जटिल मानव सभ्यता से कोसो दूर हैं, जिन्होंने रेलगाड़ी की शक्ल तक नही देखी । इनका जीवन रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल, आधुनिक समाज से बिल्कुल अलग है । पूरे भारत वर्ष में सबसे ज्यादा आदिवासी मध्यप्रदेश में ही निवास करते हैं तथा सम्पूर्ण एशिया महाद्विप में यहॉ एक आदिम जनजाति बची जो है प्रकृति पुत्र बैगा। इस जाति के लोग शेर को अपना अनुज मानते हैं ।

शोध क्षेत्र

मेरा शोध क्षेत्र बालाघाट जिले का बैहर तहसील के ग्राम मछुरदा है ।

www.ignited.in

उद्देश्य

शोध का उद्देश्य बैगा जनजाति द्वारा अपनाई गई कृषि पद्धति (बेवर, झूम कृषि) को प्रकाश में लाने हेतु बैगाओं की कृषि पद्धति बेवर का वर्तमान स्वरूप क्या है और यह समाज के लिए कितनी लाभदायक है।

बैगाओं के बेवर की पारंपरिक कृषि पद्धति, शिफ्टिंग या स्वाईपेड कृषि का एक रूप था, जिसमें जंगलों के पैंच जलने और बारिश के बाद राख द्वारा बोए गए बीज शामिल थे। हॉलाकि 19वी शताब्दी के अंत में औपनिवेशक सरकार ने कृषि के इस तरीकों को एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित कर दिया जिसे बैगाचक कहा जाता है। इसके अतिरिक्त औपनिवेशक सरकार ने बैगा लोगों को व्यस्थित कृषि के तरीको को प्रशिक्षित करने के लिए कई प्रयास किए। वर्ष 1890 में अधिसूचित होने पर बैगा चक क्षेत्र में सात गांव शामिल थे, वर्तमान में बैगा चक (बजाज) क्षेत्र में 52 गांव है, जो सभी मध्यप्रदेश के डिण्डौरी जिले में आते हैं समय के साथ अधिकांश बैगाओं ने खेती के लिए भूमि को बांधने के तरीके सीखे और अपनाए। हॉलाकि कुछ बैगाओं के बची बेवर का प्रचलन अपने रूप में जारी है। कोदो और कुटकी दो प्रमुख बेवर फसले थी जो बैगाओं के मुख्य आहार में महत्वपूर्ण तत्व है।

बेवर खेती के लाभ

हल्की-हल्की बारिश मे छप्पर के नीचे हुक्के को गुडगुडाते हुए गोंड आदिवासी जनजाति के मुखिया मूँछों पर ताव देते हुए कहते हैं कि हमें मौसम की कोई चिन्ता नही है। हमारे खेत में फसल एकदम सही है। हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई बेवर खेती को हम लोग करते हैं जिससे हमारी जनजाति को अनाज की कमी नही होती है।

आदिवासियों का अपनी खेती पर मौसम के उतार-चढाव पर कोई फर्क नही पड़ता क्योंकि वे आज भी सदियों से चली आ रही बेंवर प्रणाली से खेती करते हैं।

सर्वेक्षण

शोध के परिणाम को जानने के लिये सर्वे के आधार पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये हैं।

- **धरमु बैगा, किसान मछुरदा -**

जिला मुख्यालय से लगभग 130 कि.मी. दूर पूर्व दिशा में स्थित बिरसा ब्लाक के मछुरदा गांव बैगा जनजातियों की अधिकता है, यहाँ के आदिवासी बिना संसधनों के खेती करते हैं और साल भर खाने के लिए अनाज की कमी नही रहती है। बैगा जनजाति के मुखिया धरमु बैगा बताते हैं कि "सदियों से चली आ रही बेंवर खेती को जोता नही जाता। इस खेती में 16 से लेकर 56 तरह के पारंपरित बीजों की मदद से खेती की जाती है। इस तकनीक में ना बाढ का असर पड़ता है और ना ही सूखे का। इसमे इतनी फसल हो जाती है कि हमारे कबीले का गुजारा हो जाए"

- **बेवर में बोए जाने वाले बीज -**

यू तो आदिवासी जनजाति के कई बीज विलुप्त हो रहे हैं, लेकिन फिर भी कई तरह से बीज जैसे भेजरा, डोंगर, सिकिया, नागदावन, कुटकी रसेनी मलागर, राहर, कतली, कांग, रपडेकांग, रोहलाकांग, मदेला, उड़द छोटे राहर, रीहेला, भुरठा, कबरा, झंझरू, डोंगरा, हरवोस, बेदरा, डोलरी, सफदा कांदा और रताल किसी तरह आज भी बचे हुए है जो बेवर खेती मे प्रमुखता से बोए जाते हैं।

- **कीड़ों से सुरक्षित -**

बेवर खती की मे मिश्रत प्रणाली के कारण फसल मे कीड़ा लगने का खतरा भी नही रहता है। इसमें बाढ व अकाल झेलने की क्षमता भी होती है ओर यह कम लागत व अधिक उत्पादन की तर्ज पर काम करता है इसकी खासियत यह है कि इस खेती में एक साथ **16** से **56** प्रकार के बीजों का इस्तेमाल किया जाता है। उनमें कुछ बीज अधिक पानी में अच्छी फसल देता है तो कुछ बीज कम पानी होने या सूखा पड़ने पर भी अच्छा उत्पादन करता है।

- **ब्रिटिश सरकार ने लगाई थी रोक -**

जब देश गुलाम था तब ब्रिटिश सरकार ने जंगल कटाई रोकने के नाम पर बेवर खेती को प्रतिबंधित कर दिया था, लेकिन 1972 में भरतीय वन कानून बनने के बाद इस प्रतिबंध को वापस ले लिया गया।

बेवर खेती और बैगा महिलाओं की भूमिका

बेवर कृषि पद्धति बैगा महिलाओं में आत्म निर्भरता का गुण विकसित करती है, क्येंकि बेवर को बैगा महिलायें बडी आसानी से कर सकती है, उसमें इन्हें परम्परागत खेती की तरह हल या नांगर से जुताई नही करना पड़ता और ना ही आधुनिक कृषि पद्धति की तरह मशीनों का प्रयोग भी नही करना पड़ता। बेवर पद्धति कृषि की बेहद सरल पद्धति है, बेवर पद्धति की खेती काफी किफायती है। बेवर कम पैसों में

की जाने वाली कृषि पद्धति है । बेवर पद्धति में महिलायें बिना पुरूषों के सहयोग के बिना भी यह खेती आसानी से कर सकती है । एक अकेली महिला भी इस पद्धति से खेती कर सकती है । जबकि परम्परागत व आधुनिक खेती बेहद जटिल है । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह पद्धति महिलाओं को खेती करने में आत्मनिर्भरता प्रदान करता है ।

बेवर में नवाचार

आधुनिकता का प्रभाव हमें हर जगह दिखाई देने लगा है इससे बेवर भी नही बच पाया वर्तमान समय में बेवर कृषि पद्धति में हमने पाया है कि अब हल्का-हल्का नागर (परम्परागत कृषि यंत्र) का प्रयोग बैगाओं द्वारा किया जाने लगा है । यह परिवर्तन सराहनीय है क्योंकि इस परिवर्तन के माध्यम से कृषि पैदावार में बढ़त देखी गई है और यह परिवर्तन बैगा समाज की संस्कृति में आधुनिक समाज की संस्कृति का प्रभाव भी दृष्टिगोचर करता है ।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हमने यह पाया कि बैगाओं के द्वारा सदियों से की जाने वाली कृषि पद्धति बेवर का प्रयोग दिनोदिन कम होने लगा है । क्योंकि आधुनिक कृषि पद्धति और सरकार द्वारा बैगाओं के उत्थान के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के कारण भी बेवर कृषि पद्धति का स्वरूप बदल गया है । सरकार द्वारा बैगाचक का निर्धारण कर बैगाओं की कृषि पद्धति बेवर को सरंक्षित करने का प्रयत्न किया जा रहा है यह एक सराहनीय कदम है ।

संदर्भ सूची

1- विश्वास, नरेश - स्वराज

2- वेरियर एल्विन - " द बैगा"

3- कृष्ण कुमार तिवारी, शोध प्रबंध " बैगा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति एवं समाज कार्य हस्तक्षेप पर शोध पत्र प्रस्तुत ।

4- गुप्ता एम.एल.- समाजशास्त्र (2010) साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा

Corresponding Author

कल्पना बिसेन*

शोधार्थी, सरदार पटेल विश्वविद्यालय डोंगरिया, बालाघाट